

## रमा एकादशी कथा in Hindi

एक समय की बात है, जब एक राजा था जिसका नाम मुचुकुंद था। वह भगवान विष्णु का परम भक्त और सत्यवादी था। उसके राज्य में सभी प्रकार की वस्तुओं की प्रचुरता थी। राजा की एक पुत्री भी थी, जिसका नाम चंद्रभागा था। राजा ने अपनी पुत्री का विवाह एक अन्य राजा के पुत्र शोभन से कर दिया। राजा मुचुकुंद और उसके राज्य के सभी निवासी एकादशी व्रत का पालन करते थे और उसके कड़े नियमों का अनुसरण करते थे। यहाँ तक कि उस नगर के पशु भी एकादशी का व्रत रखते थे।

एक दिन, चन्द्रभागा ने सोचा कि उसके पति कमजोर इच्छाशक्ति के हैं और एकादशी का व्रत करना उनके लिए कठिन होगा। उसने अपने पति शोभन को बताया कि उसके पिता के राज्य में सभी, मनुष्यों से लेकर जानवरों तक, एकादशी का व्रत करते हैं। यदि शोभन व्रत नहीं करेंगे तो उन्हें राज्य छोड़ना होगा। यह सुनकर, शोभन ने भी व्रत का पालन करने का निर्णय लिया, परन्तु दुर्भाग्यवश व्रत पूरा होने से पहले ही उनका निधन हो गया। तत्पश्चात, चंद्रभागा अपने पिता के घर लौट आई और पूजा-पाठ में लीन हो गई।

एकादशी व्रत के प्रभाव से, शोभन को अगले जन्म में देवपुर नगरी का राजा बनने का आशीर्वाद प्राप्त हुआ, जहाँ उसे किसी भी वस्तु की कमी नहीं थी। एक दिन, मुचुकुंद के नगर का एक ब्राह्मण शोभन से मिला और उसने उसे पहचान लिया। ब्राह्मण ने नगर लौटकर चंद्रभागा को सारी घटना बताई। यह सुनकर चंद्रभागा अत्यंत प्रसन्न हुई और वह शोभन के पास पहुँची। चंद्रभागा 8 वर्ष की आयु से एकादशी का व्रत कर रही थी और उसने अपना सारा पुण्य शोभन को समर्पित कर दिया। इसके फलस्वरूप, देवपुर नगरी में समृद्धि आ गई। अंततः, चंद्रभागा और शोभन आनंदपूर्वक एक साथ रहने लगे।

## Rama Ekadashi Vrat Katha in English

Once upon a time, there was a king named Muchukunda. He was a devout follower of Lord Vishnu and was known for his truthfulness. His kingdom was filled with abundance in all types of resources. The king had a daughter named Chandrabhaga, whom he married off to Shobhana, the son of another king. King Muchukunda and all the residents of his kingdom strictly observed the Ekadashi fast

and followed its strict rules. Even the animals in that city observed the Ekadashi fast.

One day, Chandrabhaga thought that her husband, Shobhana, had a weak willpower, and she worried that fasting on Ekadashi would be challenging for him. She informed her husband that in her father's kingdom, everyone, from humans to animals, observed the Ekadashi fast. She added that if Shobhana did not follow the fast, he would have to leave the kingdom. Hearing this, Shobhana decided to observe the fast. However, unfortunately, before completing the fast, he passed away. After this, Chandrabhaga returned to her father's home and immersed herself in worship.

Due to the effect of the Ekadashi fast, Shobhana was blessed to be reborn as the king of Devpura, a divine city of abundance. One day, a Brahmin from Muchukunda's city met Shobhana and recognized him. The Brahmin returned to the city and told Chandrabhaga everything he had seen. Upon hearing this, Chandrabhaga was overjoyed and went to meet Shobhana. Since Chandrabhaga had been observing the Ekadashi fast since the age of eight, she dedicated all her accumulated merits to Shobhana. As a result, Devpura became even more prosperous. Ultimately, Chandrabhaga and Shobhana lived together happily and peacefully.